जगमोती

ये जगमोती है, गांव की कोटवारिन। अब ये बिन्दास बोल बोलने लगी है। बताती है ट्यूब वेल चालू हुआ तो, हमने भी साढ़े चार एकड़ गर्मी के धान की खेती की थी। मिसाई भी हो गई, कुल 120 बोरा धान मिला था। 53 हजार का धान बेचा है। 53 हजार का हिसाब भी बताती है। कहती है - इस साल अशोक (बेटा) की शादी में 20000/- रु का कर्जा हो गया था। यह बड़ा कर्ज था। धान बेच के 20000/- का कर्ज एक मुश्त अदा कर दी। अशोक आज ही दे के आया है 20 हजार धान - खेती में खर्च हुआ था। उसको निकाल के पूंजी रख दी। टेट में खोसे पल्लू को फिर निकालती है। पल्लू की गांठ खोलकर रुपया बाहर कर के फैलाती है। उसे दिखा कर जगमोती बड़ी अहक से कहती है, लक्ष्मी हर हमर घर में दोनों गोड़, चलि के आइन हे साब। अतका पईसा हमन जिनगी में नी देखे रहे। ई साल हमर घर में दू-दू लक्ष्मी आइन। बहुरिया भी त लक्ष्मी हो थे न साब। इतना कहते - कहते जगमोती के मोती जैसे दांत भी खिल-खिल पड़े थे। बिहंस पड़ी थी वह।

पूरे होते सपने

बगल खड़ा जगमोती का बेटा अशोक भी बहुत खुश है। ये बदलाव कैसे आया के जवाब में - जगमोती के बेटे अशोक ने कहा - सरकार की योजना से आया सर ! (वह पढ़ा लिखा है) क्या है कि हमारे गांव में वनग्राम विकास योजना चल रही है। गांव की गली का मुरुमीकरण हो गया। गली-किनारे पानी निकासी के लिए पक्की नाली भी बन गयी। उससे अब बरसात में कीचड़ नहीं होता। कीचड़ नहीं होता, तो बीमारी भी कम हो गई। पानी टंकी बन गयी। गांव वालों को पीने का शुद्ध पानी मिल गया। उससे भी पेट की बीमारियां थम गयीं।

समिति के पैसे से सभी को एक-एक ट्यूब वेल मिल गया। शरीर को अच्छा स्वास्थ्य मिला और खेत को पानी तो हम लोगों ने अच्छी मेहनत किये। आगे सर आप देख ही रहे है, कि हमारे गांव की किस्मत ही बदल गयी। वनग्राम विकास योजना से सर, हम लोगों को बड़ी ताकत मिली। समझिए कि हम लोग जो-जो सपना देखे थे, वो सब पूरा होते जा रहा है। वर्ष 2007-08 में वनग्राम तेन्दूचुंवा ने आर्दश ग्राम बनने की भी पात्रता पा ली है। **इस वर्ष यहां सभी घरों में जलवाही शौचालय भी बन गए हैं।**